Prithvi Devi Mantra Sadhana

सौभाग्यप्रदाता भगवती पृथ्वी मंत्र साधना

SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

मनुष्य देह पृथ्वी, जल, आकाश, वायु और अग्नि- इन पंच महाभूतों से निर्मित है। इन पंचमहाभूतों के देवता भी पंचदेवता (गणेश, विष्णु, शिव, दुर्गा और सूर्य) हैं। इन पंचदेवों का शरीर में निवास है और इनकी पूजा सर्व मंगल कार्यों में की जाती है। सूर्य वायु तत्त्व के अधिष्ठातृ देवता है। विष्णु आकाश तत्त्व के, शक्ति अग्नि तत्त्व की, शिव पृथ्वी तत्त्व के और गणेश जल तत्त्व के देवता हैं। इन पांच महाभूतों का व्यतिक्रम ही शरीर के अवयवों को प्रभावित करता है। इसलिये पंचमहाभूतों की सिद्धि से आरोग्यता, दीर्घायु एवं इनके दिव्य गुणों का शरीर में अद्भुत विकास होता है।

श्रुति के मत से भगवान् वाराह पृथ्वी पति हैं। इनके द्वारा मंगल ग्रह का जन्म हुआ और मंगल से घटेश की उत्पत्ति हुई। भगवान् वाराह ने स्वयं पृथ्वी का ध्यान एवं पूजन कर कहा- हे शुभे! तुम सबकों आश्रय प्रदान करने वाली बनों। मुनि, मनु, देवता, सिद्ध और दानव आदि सबसे सुपूजित होकर तुम सुख पाओगी। अम्बुवाची (सौरमान से आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में पृथ्वी ऋतुमती रहती है, इतने समय का नाम अम्बुवाची है) के

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

अतिरिक्त दिन में गृहप्रवेश, गृहारम्भ, वापी एवं तड़ाग के निर्माण अथवा अन्य गृहकार्य के अवसर पर देवता आदि सभी लोग मेरे वर के प्रभाव से तुम्हारी पूजा करेंगे। जो मूर्ख तुम्हारी पूजा नहीं करेगा, उसे नरक में जाना पड़ेगा। इस प्रकार भगवान् की आज्ञानुसार उपस्थित सम्पूर्ण व्यक्ति पृथ्वी की उपासना करने लगे।

जो कामान्ध व्यक्ति एकान्त में पृथ्वी पर वीर्य गिराता है, उसे वहां की जमीन में जितने रजःकण हैं, उतने वर्षों तक 'रौरव' नामक नरक में रहना पड़ता है। अम्बुवाची में भूमि खोदने वाला मानव 'कृमिदंश' नामक नरक में जाता है और उसे वहां चार युगों तक रहना पड़ता है। जो मन्दबुद्धि मानव भूमिपति के पितरों को श्राद्ध में पिण्ड न देकर श्राद्ध करता है, उसे अवश्य ही नरकगामी होना पड़ता है। दीपक, शिवलिंग, भगवती की मूर्ति, शंख, यन्त्र, शालग्राम का जल, फूल, तुलसीदल, जपमाला, पुष्पमाला, कपूर, गोरोचन, चन्दन की लकड़ी, रुद्राक्ष की माला, कुश की जड़, पुस्तक और यज्ञोपवीत- इन वस्तुओं को भूमि पर रखने से मानव नरक में वास करता है।

भूकम्प एवं ग्रहणकाल के अवसर पर पृथ्वी को खोदने से महापाप लगता है। इस मर्यादा का उल्लंघन करने वाला मनुष्य दूसरे जन्म में अंगहीन होता है। इस पर सबके भवन बने हैं,

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

इसलिये यह भूमि कहलाती है। कश्यप की पुत्री होने से 'काश्यपी' तथा स्थिररूप होने से 'स्थिरा' कहलाती हैं। विश्व को धारण करने से 'विश्वम्भरा', अनन्तरूपा होने से 'अनन्ता' तथा पृथु की कन्या होने से अथवा सर्वत्र फैली रहने से इसका नाम 'पृथ्वी' पड़ा है।

विनियोग- ॐ अस्य मंत्रस्य वराहऋषिर्निवृच्छन्दः, श्रीवसुधा देवता, सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- ॐ वराहऋषये नमः शिरसि। निवृच्छन्दसे नमो मुखे। श्रीवसुधादेवतायै नमः हृदये। विनियोगायः नमः सर्वांगे।

करन्यास- ॐ नमो अंगुष्ठाभ्यां नमः। भगवत्यै तर्जनीभ्यां नमः। धरण्यै मध्यमाभ्यां नमः। धरणिधरे अनामिकाभ्यां नमः। धरे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास- ॐ नमो हृदयाय नमः। भगवत्यै शिरसे स्वाहा। धरण्यै शिखायै वषट्। धरणिधरे कवचाय हुम्। धरे नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

ध्यानमंत्र– श्यामां विचित्रांशुकरत्नभूषणां पद्मासनां तुंगपयोधरानताम्। इन्दीवरे द्वे नवशालिमंजरीं शुकं दधानां वसुधां भजामहे।।

ध्यान उपरान्त् उत्तम सामग्रियों से भगवती का पूजनादि कर जपारम्भ करें–

मंत्र–1– 'ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणि धरे–धरे स्वाहा।'

मंत्र–2– 'ॐ ह्रीं श्रीं वसुधायै स्वाहा।'

भूमिगायत्री– 'ॐ पृथिवीदेव्यै च विद्महे सहस्रमूर्तये च धीमहि तन्नो महि प्रचोदयात्।

साधना विधि– पृथ्वी माता की साधना करने हेतु इनकी प्रतिमा अथवा यंत्र की पूजनस्थल पर प्राणप्रतिष्ठित स्थापना करें। इसके अभाव में साधना स्थल पर ही पृथ्वी का स्पर्श करते हुए पूजन करें। सवा लाख जप उपरान्त् कामानानुसार उत्तम सामग्रियों से होम करें। इस दुर्लभ मंत्र के प्रभाव से वास्तुदोष, ग्रहदोष, भूदोष एवं परिवारिक कलेश समाप्त होते हैं तथा अक्षय धन, राज्य और भूखण्ड की प्राप्ति होती है। इस मंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल ग्रहण करने से मनुष्य दीर्घायु, बल, ज्ञान एवं पराक्रम प्राप्त

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

करता है और कृत्यादोष से मुक्त होता है। जिस भूमि की इच्छा हो शुक्रवार को प्रातःकाल वहां की थोड़ी मिट्टी लेकर उसे जल में डालकर उसमें चरु पकाकर उसमें दूध तथा घृत मिलाकर छः मास तक होम करने से साधक उस भूमि को प्राप्त करता है। गृहनिर्माण बाधा अथवा भूमि सम्बन्धी समस्त दोषों से मुक्ति हेतु यह मंत्र सर्वश्रेष्ठ है। इनके साथ में भगवान् नारायण अथवा उनके वाराहावतार की उपासना करने से त्वरित लाभ मिलता है। इस साधना के अन्तर्गत कई बार शरीर में भारीपन या दर्द बन जाता है इसलिये समर्थ गुरु के संरक्षण में ही इस साधना को आरम्भ करें।

भूमि को माता तुल्य समझने वाला मनुष्य प्रातःकाल उठकर भूमि पर पैर रखने से पूर्व इस मंत्र से भगवती को प्रणाम अवश्य करें।

मंत्र- समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते। विष्णुपत्नीं नमुस्तभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

भगवान् विष्णुकृतं पृथ्वी स्तोत्रम्- विष्णुरुवाच- यज्ञसूकरजाया त्वं जयं देहि जयावहे। जयेऽजये जयाधारे जयशीले जयप्रदे।1।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

सर्वाधारे सर्वबीजे सर्वशक्तिसमन्विते। सर्वकामप्रदे देवि सर्वेष्टम् देहि मे भवे।2।

सर्वशस्यालये सर्वशस्याढ्ये सर्वशस्यदे। सर्वशस्यहरे काले सर्वशस्यात्मिके भवे।3।

मंगले मंगलाधारे मंगल्ये मंगलप्रदे। मंगलार्थे मंगलेशे मंगलं देहि मे भवे।4।

भूमे भूमिपसर्वस्वे भूमिपालपरायणे। भूमिपाहंकाररूपे भूमिं देहि च भूमिदे।5।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं तां सम्पूज्य च यः पठेत्। कोटिकोटि जन्मजन्म स भवेद् भूमिपेश्वरः।6।

भूमिदानकृतं पुण्यं लभते पठनाज्जनः। भूमिदानहरात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः।7।

भूमौ वीर्यत्यागपापाद् भूमौ दीपादिस्थापनात्। पापेन मुच्यते प्राज्ञः स्तोत्रस्य पाठनान्मुने। अश्वमेधशतं पुण्यं लभते नात्र संशयः।8।

श्रीपृथ्वी सूक्तम्- ऋषि-अथर्वा। देवता-भूमि। छन्दः- त्रिष्टुप्, जगती, पंक्ति, अष्टि, शक्वरी, बृहती, अनुष्टप्, गायत्री।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

सूक्तम्- सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।1।
असंबाधं मध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु।
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः।2।
यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु।3।
यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु।4।
यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्।
गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु।5।
विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु।6।
यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम्।
सा नो मधु प्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा।7।
यार्णवेऽधि सलिलमग्र आसीद् यां मायाभिरन्वचरन् मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे।8।

यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।

सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा।9।

यामश्विनावमिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे।

इन्द्रो यां चक्रं आत्मनेऽनमित्रां शचीपतिः।

सा नो भूमिर्वि सृजतां माता पुत्राय मे पयः।10।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु।

बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्।

अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम्।11।

यत्ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।

तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।

पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु।12।

यस्यां वेदिं परिगृह्णन्ति भूम्यां यस्यां यज्ञं तन्वते विश्वकर्माणः।

यस्यां मीयन्ते स्वरवः पृथिव्यामूर्ध्वाः शुक्रा आहुत्याः पुरस्तात्।

सा नो भूमिर्वर्धयद् वर्धमाना।13।

यो नो द्वेषत् पृथिवि यः पृतन्याद् योऽभिदासान्मनसा यो वधेन।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

तं नो भूमे रन्धय पूर्वकृत्वरि।14।

त्वज्जातास्त्यवि चरन्ति मर्त्यास्त्वं बिभर्षि द्विपदस्त्वं चतुष्पदः।

तवेमे पृथिवि पंच मानवा येभ्यो ज्योतिरमृतं मर्त्येभ्य उद्यन्त्सूर्यो रश्मिर्भिरातनोति।15।

ता नः प्रजाः सं दुह्रतां समग्रा वाचो मधु पृथिवि धेहि मह्यम्।16।

विश्वस्वं मातरमोषधीनां ध्रुवां भूमिं पृथिवीं धर्मणा धृताम्।

शिवां स्योनामनु चरेम विश्वहा।17।

महत् सधस्थं महती बभूविथ महान् वेग एजथुर्वेपथुष्टे।

महांस्त्वेन्द्रो रक्षत्यप्रमादम्।

सा नो भूमे प्र रोचय हिरण्यस्येव संदृशि मा नो द्विक्षत कश्चन्।18।

अग्निर्भूम्यामोषधीष्वग्निमापो बिभ्रत्यग्निरश्मसु।

अग्निरन्तः पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्नयः।19।

अग्निर्दिवः आ तपत्यग्नेर्देवस्योर्वन्तरिक्षम्।

अग्निं मर्तास इन्धते हव्यवाहं घृतप्रियम्।20।

अग्विासाः पृथिव्यसितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु।21।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

भूम्यां देवेभ्यो ददति यज्ञं हव्यमरंकृतम्।

भूम्यां मनुष्या जीवन्ति स्वधयान्नेन मर्त्याः।

सा नो भूमिः प्राणमायुर्दधातु जरदष्टिं मा पृथिवी कृणोतु।22।

यस्ते गन्धः पृथिवि संबभूव यं बिभ्रत्योषधयो यमापः।

यं गन्धर्वा अप्सरसश्च भेजिरे तेन मा सुरभिं कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन।23।

यस्ते गन्धः पुष्करमाविवेश यं संजभ्रुः सूर्याया विवाहे।

अमर्त्याः पृथिवि गन्धमग्रे तेन मा सुरभिं कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन।24।

यस्ते गन्धः पुरुषेषु स्त्रीषु पुंसु भगो रुचिः।

यो अश्वेषु वीरेषु यो मृगेषूत हस्तिषु।

कन्यायां वर्चो यद् भूमे तेनास्माँ अपि सं सृज मा नो द्विक्षत कश्चन्।25।

शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता धृता।

तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः।26।

यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

पृथिवीं विश्वधायसं धृतामच्छावदामसि।27।

उदीरणा उतासीनास्तिष्ठन्तः प्रक्रामन्तः।

पद्भ्यां दक्षिणसव्याभ्यां मा व्यथिष्महि भूम्याम्।28।

विमृग्वरीं पृथिवीमा वदामि क्षमां भूमिं ब्रह्मणा वावृधानाम्।

ऊर्जं पुष्टं बिभ्रतीमन्नभागं घृतं त्वाभि नि षीदेम भूमे।29।

शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु यो नः सेदुरप्रिये तं नि दध्मः।

पवित्रेण पृथिवि मोत्पुनामि।30।

यास्ते प्राचीः प्रदिशो या उदीचीर्यास्ते भूमे अधराद् याश्च पश्चात्।

स्योनास्तां मह्यं चरते भवन्तु मा नि पप्तं भुवने शिश्रियाणः।31।

मा नः पश्चान्मा पुरस्तान्नुदिष्ठा मोत्तराद्धरादुत।

स्वस्ति भूमे नो भव मा विदन् परिपन्थिनो वरीयो यावया वधम्।32।

यावत् तेऽभि विपश्यामि भूमे सूर्येण मेदिना।

तावन्मे चक्षुर्मा मेष्टोत्तरामुत्तरां समाम्।33।

यच्छयानः पर्यावर्ते दक्षिणं सव्यमभि भूमे पार्श्वम्।

उत्तानास्त्वा प्रतीचीं यत् पृष्टीभिरधिशेमहे।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

मा हिंसीस्तत्र नो भूमे सर्वस्य प्रतिशीवरि।34।

यत् ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।

मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्।35।

ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः।

ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम्।36।

याप सर्पं विजमाना विमृग्वरी यस्यामासन्नग्नयो ये अप्स्वन्तः।

परा दस्यून् ददती देवपीयूनिन्द्रं वृणाना पृथिवी न वृत्रम्।

शक्राय दध्रे वृषभाय वृष्णे।37।

यस्यां सदोहविर्धाने यूपो यस्यां निमीयते।

ब्रह्माणो यस्यामर्चयन्त्यृग्भिः साम्ना यजुर्विदः।

युज्यन्ते यस्यामृत्विजः सोममिन्द्राय पातवे।38।

यस्यां पूर्वे भूतकृत ऋषयो गा उदानृचुः।

सप्त सत्रेण वेधसो यज्ञेन तपसा सह।39।

सा नो भूमिरा दिशतु यद्धनं कामयामहे।

भगो अनुप्रयुंक्तामिन्द्र एतु पुरोगवः।40।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्या व्यैलबाः।

युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्यां वदति दुन्दुभिः।

सा नो भूमिः प्रणुदतां सपत्नानसपत्नं मा पृथिवी कृणोतु।41।

यस्यामन्नं व्रीहियवौ यस्या पंच कृष्टयः।

भूम्यौ पर्जन्यपत्न्यै नमोऽस्तु वर्षमेदसे।42।

यस्याः पुरो देवकृताः क्षेत्रे यस्या विकुर्वते।

प्रजापति पृथिवीं विश्वगर्भामाशामाशां रण्यां नः कृणोतु।43।

निधिं बिभ्रती बहुधा गुहा वसु मणिं हिरण्यं पृथिवी ददातु मे।

वसुनि नो वसुदा रासमाना देवी दधातु सुमनस्यमाना।44।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।

सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।45।

यस्ते सर्पो वृश्चिकस्तृष्टदंश्मा हेमन्तजब्धो भृमलो गुहा शये।

क्रिमिर्जिन्वत् पृथिवि यद्यदेजति प्रावृषि तन्नः।

सर्पन्मोप सृपद् यच्छिवं तेन नो मृड।46।

ये ते पन्थानो बहवो जनायना रथस्य वर्त्मानसश्च यातवे।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

यैः संचरन्त्युभये भद्रपापास्तं पन्थानं जयेमानमित्रमतस्करं यच्छिवं तेन नो मृड।47।

मल्वं बिभ्रती गुरुभृद् भद्रपापस्य निधनं तितिक्षुः।

वराहेण पृथिवी संविदाना सूकराय वि जिहीते मृगाय।48।

ये त आरण्याः पशवो मृगा वने हिताः सिंहा व्याघ्राः पुरुषादश्चरन्ति।

उलं वृकं पृथिवि दुच्छुनामित ऋक्षीकां रक्षो अप बाधयास्मत्।49।

ये गन्धर्वा अप्सरसो ये चारायाः किमीदिनः।

पिशाचान्त्सर्वा रक्षांसि तानस्मद् भूमे यावय।50।

यां द्विपादः पक्षिणः संपतन्ति हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि।

यस्यां वातो मातरिश्वेयते रंजासि कृण्वंश्च्यावयंश्च वृक्षान्।

वातस्य प्रवामुपवामनु वात्यर्चिः।51।

यस्याः कृष्णमरुणं च संहिते अहोरात्रे विहिते भूम्यामधि।

वर्षेण भूमिः पृथिवी वृतावृता सा नो दधातु भद्रया प्रिये धामनि धामनि।52।

द्यौश्च म इदं पृथिवी चान्तरिक्षं च मे व्यचः।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

अग्निः सूर्य आपो मेधां विश्वे देवाश्च स ददुः।53।

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।

अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः।54।

अदो यद् देवि प्रथमाना पुरस्ताद् देवैरुक्ता व्यसर्पो महित्वम्।

आ त्वा सुभूतमविश्त् तदानीमकल्पयथाः प्रदिशश्चतस्रः।55।

ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्याम्।

ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते।56।

अश्व इव राजो दुधुवे वि तान् जनान् य आक्षियन् पृथिवीं यादजायत्।

मन्द्रोग्रेत्वरी भुवनस्य गोपा वनस्पतीनां गृभिरोषधीनाम्।57।

यद् वदामि मधुमत्तद् वदामि यदीक्षे तद् वनन्ति मा।

त्विषीमानस्मि जूतिमानवान्यान् हन्मि दोधतः।58।

शन्तिवा सुरभिः स्योना कीलालोध्नी पयस्वती।

भूमिरधि ब्रवीतु मे पृथिवी पयसा सह।59।

यामन्वैच्छद्धविषा विश्वकर्मान्तरर्णवे रजसि प्रविष्टाम्।

भुजिष्यंपात्र निहितं गुहा यदाविर्भोगे अभवन् मातृमदभ्यः।60।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

त्वमस्यावपनी जनानामदितिः कामदुघा पप्रथाना।

यत् त ऊनं तत् त आ पूरयाति प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य।61।

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।

दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।62।

भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।

संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्।63।

भूमि पूजन करने के पश्चात् नित्य भूमिसूक्तम् का पाठ करने से बाधारहित होकर मनुष्य का सर्वप्रकार से कल्याण एवं मंगल होता है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

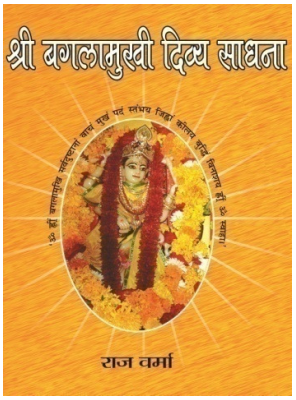

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413